RAMPHAL MANDAL

Ramphal Mandal was born on 6 August 1924 in the village of Madhurapur, under Bajpatti Block in the present-day Sitamarhi district of Bihar, to Gokhul Mandal and Garbi Devi. Born into a poor farming family, he married Jagpatia Devi at the age of sixteen. Despite humble beginnings, he grew into a courageous revolutionary who made an enduring contribution to India's freedom struggle.

During the Second World War, Mahatma Gandhi launched the Quit India Movement at the All India Congress Committee Session in Mumbai on 8 August 1942, giving the historic call of "Do or Die." The arrest of Gandhi and other national leaders triggered a nationwide uprising. The movement soon spread to Sitamarhi, where people from all sections of society participated in protests. British authorities attempted to suppress the demonstrations through indiscriminate firing, resulting in the deaths of many innocent men, women and children.

Deeply moved by these atrocities, Ramphal Mandal led thousands of people to Bajpatti Chowk on 24 August 1942, armed with traditional weapons such as sticks, spears, axes and sickles, to challenge British rule. During the confrontation, the then Sub-Divisional Officer of Sitamarhi, Hardeep Narayan Singh, along with Police Inspector Rammoorti Jha and other police personnel, attacked the freedom fighters. In retaliation, Ramphal Mandal struck SDO Hardeep Narayan Singh with his axe, while the enraged crowd killed Police Inspector Rammoorti Jha, Havildar Shyamlal Singh and peon Darbeshi Singh, although the driver managed to escape and later testified in court. Thereafter, Ramphal Mandal went underground and continued revolutionary activities.

Based on the testimony of the surviving driver, case was registered in the Bhagalpur Court against Ramphal Mandal, Baba Nar Singh Das, Kapil Dev Singh, Harihar Prasad and nearly 4,000 others, and a reward of ₹5,000 was announced for his capture. Betrayed by village watchman Shivdhari Kunwar, he was arrested on 1 September 1942, imprisoned in Sitamarhi Jail and later transferred to Bhagalpur Central Jail on 5 September 1942.

After months of trial, Judge C.R. Saini sentenced Ramphal Mandal to death while the other accused received life imprisonment. Despite severe torture and repeated advice to retract his confession, he steadfastly declared, "Yes, Sir, I struck the first blow with my axe." On 23 August 1943, at the age of 19 years and 17 days, he embraced the gallows with remarkable courage. His last wish was that the British should leave India and free the country from the chains of slavery. Belonging to the Dhanuk community, classified among the extremely backward classes, his courage, sacrifice and patriotism inspired countless young Indians to join the freedom movement. His life remains a timeless symbol of valour, justice and devotion to the nation.

The Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp in honour of brave freedom fighter 'Ramphal Mandal'. This postage stamp reflects his indomitable courage, extraordinary valour and supreme sacrifice in India's struggle for freedom.

Credits:

Stamps / FDC / Brochure / Cancellation Cachet	:	Shri Kamleshwar Singh
Text	:	Based on information provided by the proponent

भारतीय डाक
डाक सेवा-जन सेवा
India Post
Dak Sewa-Jan Sewa

डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS

रामफल मंडल
RAMPHAL MANDAL

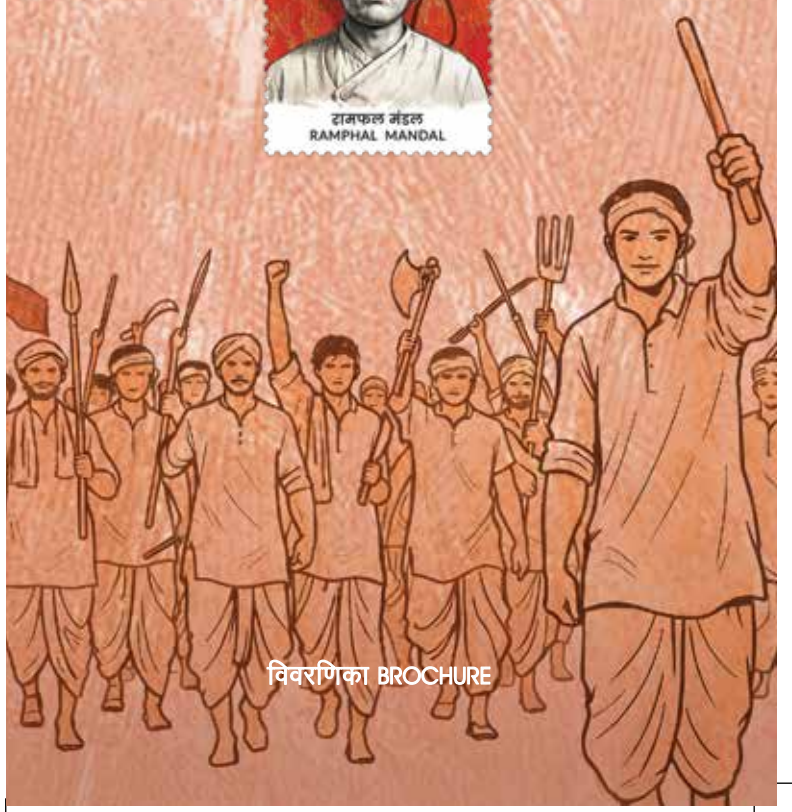

विवरणिका BROCHURE

रामफल मंडल

रामफल मंडल का जन्म 6 अगस्त 1924 को वर्तमान बिहार के सीतामढ़ी जिले के बाजपट्टी प्रखंड स्थित मधुरापुर गांव में गोखुल मंडल एवं गरबी देवी के घर एक निर्धन किसान परिवार में हुआ। मात्र 16 वर्ष की आयु में उनका विवाह जगपतिया देवी से हुआ। साधारण पारिवारिक पृष्ठभूमि से आने के बावजूद उन्होंने अदम्य साहस, राष्ट्रभक्ति और त्याग का परिचय देते हुए भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अमिट योगदान दिया।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान 8 अगस्त 1942 को मुंबई में आयोजित अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी के अधिवेशन में महात्मा गांधी ने "भारत छोड़ो आंदोलन" का आह्वान करते हुए "करो या मरो" का मंत्र दिया। गांधीजी एवं अन्य राष्ट्रीय नेताओं की गिरफ्तारी के बाद यह आंदोलन जन–जन का आंदोलन बन गया। इसकी लहर सीतामढ़ी तक पहुँची, जहाँ बच्चे, महिलाएँ, बुजुर्ग और पुरुष सभी अंग्रेजी शासन के विरुद्ध सड़कों पर उतर आए। आंदोलन को कुचलने के लिए अंग्रेजी शासन ने निहत्थे प्रदर्शनकारियों पर गोली चलवाई, जिसमें अनेक निर्दोष नागरिकों ने अपने प्राण गंवाए।

इस अमानवीय घटना से आक्रोशित होकर 24 अगस्त 1942 को युवा क्रांतिकारी रामफल मंडल ने हजारों लोगों का नेतृत्व करते हुए बाजपट्टी चौक पर अंग्रेजी शासन के विरुद्ध प्रदर्शन किया। डंडा, भाला, फरसा एवं गड़ासे जैसे पारंपरिक हथियारों से लैस स्वतंत्रता सेनानियों पर तत्कालीन सीतामढ़ी अनुमंडल पदाधिकारी हरदीप नारायण सिंह, पुलिस निरीक्षक राममूर्ति झा तथा अन्य पुलिसकर्मियों ने हमला किया। प्रतिरोध में रामफल मंडल ने एस. डी. ओ. हरदीप नारायण सिंह पर गड़ासे से प्रहार किया, जबकि उग्र भीड़ ने पुलिस निरीक्षक राममूर्ति झा, हवलदार श्यामलाल सिंह तथा चपरासी दरबेशी सिंह की हत्या कर दी। हालांकि, चालक भागने में कामयाब रहा जिसने बाद में कोर्ट में गवाही दी। इसके बाद रामफल मंडल भूमिगत हो गए और क्रांतिकारी गतिविधियों में निरंतर सक्रिय रहे।

चालक के बयान के आधार पर रामफल मंडल, बाबा नरसिंह दास, कपिल देव सिंह, हरिहर प्रसाद सहित लगभग 4,000 लोगों के विरुद्ध भागलपुर न्यायालय में मुकदमा दर्ज किया गया तथा उनकी गिरफ्तारी पर ₹5,000 का इनाम घोषित किया गया। दफादार शिवधारी कुंवर की मुखबिरी के फलस्वरूप उन्हें 1 सितम्बर 1942 को गिरफ्तार कर पहले सीतामढ़ी जेल तथा बाद में 5 सितम्बर 1942 को भागलपुर केंद्रीय कारागार भेज दिया गया।

महीनों तक चली सुनवाई के उपरांत न्यायाधीश सी. आर. सैनी ने रामफल मंडल को फाँसी तथा अन्य अभियुक्तों को आजीवन कारावास का दंड सुनाया। कठोर यातनाएँ सहने और अपना बयान बदलने के अनेक प्रयासों के बावजूद उन्होंने निर्भीकता से कहा "हाँ हुजूर, पहला फरसा हमने ही मारा। "23 अगस्त 1943" को मात्र 19 वर्ष 17 दिन की आयु में उन्होंने भागलपुर केंद्रीय कारागार में हँसते–हँसते फाँसी का वरण किया। उनकी अंतिम इच्छा थी कि अंग्रेज भारत छोड़ दें और मातृभूमि को गुलामी की बेड़ियों से मुक्त करें। धानुक समाज से आने वाले रामफल मंडल का अदम्य साहस, वीरता और सर्वोच्च बलिदान समाज के वंचित वर्गों सहित समूचे राष्ट्र के लिए प्रेरणास्रोत बना। उनका जीवन आज भी देशभक्ति, न्याय और राष्ट्रसेवा की सर्वोच्च भावना का प्रतीक है।

डाक विभाग वीर स्वतंत्रता सेनानी 'रामफल मंडल' पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है। यह डाक टिकट भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उनके अदम्य साहस, अद्वितीय वीरता एवं सर्वोच्च बलिदान को दर्शाती है।

आभार:

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/: श्री कमलेश्वर सिंह
विवरणिका/विरूपण कैशे

पाठ : प्रस्तावक द्वारा प्रेषित सामग्री पर आधारित।

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्य	:	500 पैसे
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक–टिकटें	:	303690
Stamp Printed	:	303690
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamps, Miniature Sheets, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00